पुस्तक - वितान

पाठ - अतीत में दबे पाँव

लेखक : ओम थानवी

मुअनजो-दड़ो क्या है? कहाँ है? :- मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा प्राचीन भारत के दो प्राचीन व नियोजित नगर हैं। ये सिंधु घाटी के परिपक्व दौर के शहर हैं। मुअनजो-दड़ो ताम्र काल का सबसे बड़ा शहर है। यहाँ की खुदाई में बड़ी संख्या में इमारतें, सड़कें, धातु-पत्थर की मूर्तियाँ, बर्तन, मोहरें, खिलौने आदि मिले हैं। मुअनजो-दड़ो अपने समय में घाटी सभ्यता की राजधानी था। यह शहर दो सौ हेक्टर क्षेत्र में फैला था तथा यहाँ की आबादी पच्चीस हज़ार थी, अर्थात् ये पाँच हज़ार साल पहले महानगरों की श्रेणी में आता था।

मुअनजो-दड़ो टीलों पर आबाद शहर था। ये टीले मनुष्य द्वारा कच्ची, पक्की ईंटों से बनाए गए थे, ताकि सिंधु नदी का पानी आने पर शहर बचा रहे।

मुअनजो-दड़ो शहर :- मुअनजो-दड़ो शहर की ये खूबी है कि इस शहर की सड़कों और गलियों में आज भी घूम सकते हैं। आज भी किसी दीवार पर पीठ टिकाकर सुस्ता सकते हैं। आज भी किसी घर में प्रवेश करते समय ठिठक सकते हैं कि यह आपका घर नहीं है। रसोई की खिड़की पर खड़े होकर पकवानों की गंध महसूस कर सकते हैं। सुनसान मार्ग में बैलगाड़ी की रुन-झुन सुन सकते हैं। किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ कहीं लेकर नहीं जाती, परंतु अनुभव होता है हम दुनिया की छत पर हैं, जहाँ से इतिहास के पार झाँक रहे हैं।

बौद्ध स्तूप वाला चबूतरा :- पच्चीस फुट ऊँचे चबूतरे पर छब्बीस सदी पहले का स्तूप है। यह स्तूप ईटों से बना है। चबूतरे पर भिक्षुओं के कमरे हैं। 1922 में राखाल दास बनर्जी यहाँ आए थे। यहाँ खुदाई करने पर ज्ञात हुआ कि यहाँ की सभ्यता ईसा पूर्व की है। इससे यह भी पता चला कि सिंधु घाटी की सभ्यता मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यता के समकक्ष है। स्तूप से शहर को देखने पर यह नगरीय भारत का सबसे पुराना लैंडस्केप दिख रहा था। न आकाश बदला, न धरती बदली, परंतु कई सभ्यताएँ, इतिहास और कहानियाँ बदल गई। स्तूप वाला चबूतरा मुअनजो-दड़ो के खास हिस्से के एक सिरे पर स्थित है। पुरातत्व के विद्वान इसे गढ़ कहते हैं। मुअनजो-दड़ो ने दुनिया को सिखाया कि सत्ता, चाहे राज सत्ता हो या धर्म सत्ता, चारदीवारी के अंदर सत्ता केंद्र होता था तथा शेष शहर गढ़ से दूर बसा होता था।

स्तूप वाले चबूतरे से शहर :- मुअनजो-दड़ो की प्रसिद्ध इमारतों के खंडहर चबूतरे के पीछे यानी पश्चिम में स्थित थे। इन इमारतों में हैं - प्रशासनिक इमारतें, सभा भवन, ज्ञान शाला, कोठार व अनुष्ठानिक महाकुंड आदि।

चबूतरे से नीचे देखने पर मुअनजो-दड़ो की अनूठी नगर नियोजन व्यवस्था साफ दिखाई देती है। शहर की सारी सड़कें सीधी या आड़ी हैं। वास्तुकार इसे ग्रिड प्लान कहते हैं। आधुनिक समय में ब्रासीलिया, चंडीगढ़ और इस्लामाबाद ग्रिड शैली से बसे शहर हैं।

गढ़ के सामने पूर्व में उच्च वर्ग की बस्ती है। उसके पीछे पाँच किलोमीटर दूर सिंधु नदी बहती है। दक्षिण में टूटे-फूटे घरों का जमघट है। यह कामगारों की बस्ती है।

<u>महाकुंड</u> :- स्तूप वाले टीले से महाकुंड के विहार की दिशा में उतरने पर दाईं तरफ एक लंबी गली दीखती है। गली का नाम दैव मार्ग रखा गया है। इसी के आगे महाकुंड है। उस सभ्यता में सामूहिक स्नान किसी अनुष्ठान का अंग होता था। कुंड के उत्तर एवं दक्षिण में कुंड में जाने की सीढ़ियाँ हैं। इस कुंड के तीन तरफ साधुओं के कमरे हैं। उत्तर में दो पंक्तियों में आठ स्नानघर हैं, इनमें से किसी स्नानघर का द्वार दूसरे के सामने नहीं खुलता। यह कुंड पक्की ईंटों से बना है। कुंड का पानी रिस न सके और बाहर से अशुद्ध पानी कुंड में न आ सके, इसके लिए कुंड के तल और दीवारों पर ईंटों के बीच चूने और चिरोड़ी के गारे का प्रयोग हुआ है। पीछे की दीवार के साथ एक और दीवार खड़ी की गई है, जिसमें सफेद डामर का प्रयोग है। कुंड में पानी की व्यवस्था के लिए दोहरी दीवार वाला कुआँ है। कुंड के पानी को बाहर निकालने के लिए पक्की ईंटों से बनी नालियाँ हैं, जो ईंटों से ढकी हुई भी हैं।

<u>कुंड के आसपास की इमारतें व उनकी विशेषता</u> :- कुंड के दूसरी तरफ कोठार है। कर के रूप में मिला अनाज यहाँ रखा जाता था। कोठार हवादार है तथा इसमें चौकियाँ बनी हैं। यहाँ नौ-नौ चौकियों की तीन कतारें हैं। कोठार के उत्तर की गली में बैल-गाड़ियों से अनाज उतारा जाता था। कोठार से यह भी ज्ञात होता है कि सिंधु घाटी की सभ्यता में व्यापार ही नहीं, उन्नत खेती भी होती थी। इतिहासकार इरफ़ान हबीब के अनुसार यहाँ कपास, गेहूँ, जौ, सरसों, चने की उपज के साक्ष्य मिले हैं। यहाँ ज्वार, बाजरा और रागी की उपज भी होती थी। यहाँ खजूर, खरबूजा और अंगूर भी उगाया जाता था। यहाँ कपास की केवल खेती ही नहीं होती थी, अपितु यहाँ सूत की कताई, बुनाई और रंगाई भी होती थी।

महाकुंड के उत्तर-पूर्व में एक लंबी इमारत के अवशेष मिले हैं। इसके बीच में खुला दालान है तथा तीन तरफ बरामदे हैं, जिनके साथ कभी छोटे-छोटे कमरे रहे होंगे। ऐसा माना जाता है कि यह कॉलेज आफ प्रीस्ट्स है। दक्षिण में एक टूटी-फूटी इमारत है। इसमें बीस खंभों वाला एक बड़ा हाल है। माना जाता है कि यह राज्य सचिवालय, सभा भवन या सामुदायिक केंद्र रहा होगा।

पूरब की बस्ती "रईसों की बस्ती" है। यहाँ बड़े घर, चौड़ी सड़कें, अधिक कुएँ हैं। इस क्षेत्र को डी.के. हलका भी कहा जाता है। शहर की मुख्य सड़क यहीं पर है। यह सड़क पूरे शहर को नापती है। इस सड़क पर दो बैल-गाड़ियाँ एक साथ आ-जा सकती थी।

इस सड़क के दोनों ओर घर हैं। कोई भी घर सड़क पर नहीं खुलता। चंडीगढ़ शहर कार्बुजिए द्वारा इसी शैली से बनाया गया। सड़क के समानांतर ढकी हुई नालियाँ हैं। हर घर में स्नानघर है। घरों के अंदर से गंदा पानी घर से बाहर हौदी में आता है और वहाँ से नालियों में जाता है। अधिकतर नालियाँ ढकी हुई हैं। बस्ती के अंदर छोटी गलियाँ, छोटी सड़कें हैं। छोटी सड़कें भी नौ फुट चौड़ी हैं। मुअनजो-दड़ो में सात सौ के करीब कुएँ हैं। नदी, कुएँ, कुंड, स्नानघर और पानी निकासी की श्रेष्ठ व्यवस्था है। इस आधार पर सिंधु घाटी की सभ्यता को जल-संस्कृति कह सकते हैं।

डी के जी (काशीनाथ दीक्षित) हलका :- इस हलके में घरों की दीवारें मोटी और ऊँची हैं। ऐसा लगता है कि इन घरों में दूसरी मंजिल होती थी। दीवारों के छेद ये संकेत देते हैं। घर ईटों के हैं। 1:2:4 के अनुपात की कच्ची-पक्की दोनों प्रकार की ईंटें हैं। इन घरों के सामने की दीवार में केवल प्रवेश द्वार है, खिड़कियाँ नहीं हैं। घर के आँगन के चारों तरफ कमरे हैं। इन कमरों की खिड़कियाँ आँगन में खुलती हैं। ऐसा अनुमान है कि बड़े आँगन वाले घरों में उद्यम होता था। यहाँ अधिकतर घर तीस-गुणा-तीस फुट के हैं। कुछ इस से दुगने और तिगुने आकार के हैं। एक घर को मुखिया का घर कहा गया है। इसमें दो आँगन हैं तथा लगभग बीस कमरे हैं। डी के जी हलका आगे पूरब में है। यहाँ दाढ़ी वाले नरेश की मूर्ति मिली थी।

एच आर (हेरल्ड हरग्रीव्स) हलका :- यहाँ एक बड़े घर में कंकाल मिले थे, जिनकी कई तरह की कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। प्रसिद्ध नर्तकी शिल्प यहीं पर मिली, इस के जोड़ का शिल्प शायद ही हो। यहीं पर के बड़े घर को उपासना केंद्र माना जाता है। इसमें आमने-सामने दो चौड़ी सीढ़ियाँ ऊपर की मंजिल की तरफ जाती हैं। पश्चिम की गढ़ी के ठीक पीछे माधो स्वरूप वस्स के नाम पर वी एस हलका है। यहाँ पर रंगरेज का कारखाना है, ईंटों के गोल गड्ढे हैं। माना जाता है कि इस में रंगाई के बर्तन रखे जाते थे। दो कतारों में यहाँ सोलह छोटे एक मंजिला मकान हैं। स्नानघर इन घरों में भी है तथा बाहर बस्ती में कुएँ सामूहिक प्रयोग के लिए हैं।

मुअनजो-दड़ो में कुओं को छोड़कर सब कुछ चौकोर है – नगर योजना, घर, बस्ती, कुंड, ठप्पे, मुहरें, चौपड़, तोल के बाट आदि। छोटे घर में छोटे कमरे हैं तथा बड़े घरों में भी छोटे कमरे हैं। इससे लगता है कि यहाँ आबादी काफी होगी, एक-एक घर में कई लोग रहते होंगे। मुअनजो-दड़ो में शेर, हाथी, गैंडे मुहरों पर अंकित हैं। इससे पता चलता है कि यहाँ मरूभूमि नहीं थी, खेती होती थी।। शुरू में बारिश होती होगी, धीरे-धीरे यहाँ बारिश घटने लगी और कुओं का जल स्तर कम होने लगा। पानी की कमी से यह इलाका उजड़ने लगा तथा सिंधु घाटी की समृद्ध सभ्यता भी।

मुअनजो-दड़ो के सूने घरों को देखकर लेखक को राजस्थान के कुलधरा की याद आ गई। जैसलमेर के मुहाने पर पीले पत्थरों वाला खूबसूरत गाँव है, जहाँ के स्वाभिमानी लोग डेढ़ सौ वर्ष पहले राजा से तकरार हो जाने से रातों-रात गाँव छोड़ कर चले गए। लोग चले गए लेकिन वक्त खंडहरों में

थम गया। राजस्थान, गुजरात, पंजाब और हरियाणा में कुएँ, कुंड, गली-कूचे, कच्ची-पक्की ईंटों के घर आज भी मिलते हैं, जो हजारों साल पुराने हैं।

मुअनजो-दड़ो का अजायबघर :- मुअनजो-दड़ो की खुदाई में लगभग पाँच हज़ार वस्तुएँ मिली हैं। मुख्य चीजें कराची, लाहौर दिल्ली और लंदन में हैं। कुछ सामान यहाँ के अजायबघर में है। यह सामान सिंधु सभ्यता की झलक दिखाने के लिए काफी है। काला पड़ चुका गेहूँ, ताँबे-काँसे के बर्तन, मुहरें, वाद्ययंत्र, चाक पर बने मिट्टी के बर्तन, उन पर बने काले-भूरे चित्र, चौपड़ की गोटियाँ, दीये, माप-तौल के पत्थर, ताँबे का आईना, मिट्टी की बैलगाड़ी, खिलौने, दो पाट की चक्की, कंघी, मिट्टी के कंगन, रंग-बिरंगे पत्थर के मनकों के हार तथा पत्थर के औजार। अजायबघर में औजार तो हैं, पर हथियार नहीं हैं, जैसे राजतंत्र में होते हैं।

सिंधु सभ्यता में किस प्रकार का शासन प्रबंध :- विचार का विषय है कि सिंधु सभ्यता में किस प्रकार का शासन प्रबंध या सामाजिक प्रबंध था? यहाँ अनुशासन तो है, पर ताकत के बल पर नहीं। इससे लगता है यहाँ सैन्य सत्ता नहीं थी। अनुशासन यहाँ जरूर था। नगर-योजना, वास्तुशिल्प, मुहर-ठप्पों, पानी, साफ-सफाई आदि में एकरूपता है।

दूसरी सभ्यताओं में राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले महल, उपासना स्थल, पिरामिड, मूर्तियाँ आदि हैं। सिंधु सभ्यता में न भव्य महल हैं, न मंदिर, न राजाओं-महंतों की समाधियाँ हैं। मूर्ति शिल्प छोटे हैं, औजार छोटे हैं। नरेश का मुकुट छोटा है, उससे छोटे मुकुट की कल्पना भी नहीं कर सकते। नावें मिस्र की नावों जैसी हैं, पर छोटी हैं। ये एक लो-प्रोफाइल सभ्यता थी। कह सकते हैं कि लघुता में महानता का अनुभव करने वाली सभ्यता थी।

मुअनजो-दड़ो में भव्यता का आडंबर नहीं :- मुअनजो-दड़ो सिंधु सभ्यता का सबसे समृद्ध शहर है, परंतु यहाँ भव्यता का आडंबर नहीं है। सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्त्व था। वास्तु कला, नगर नियोजन, धातु-पत्थर की मूर्तियों, मिट्टी के बर्तनों, उन पर बने चित्रों, केश विन्यास, आभूषणों, सुघड़ अक्षरों की लिपि से कला और सुरुचि झलकती है। हम कह सकते हैं कि सिंधु घाटी की खूबी उसका सौंदर्य बोध है, जो राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाज पोषित था।

अजायबघर में कुछ सुइयाँ भी मिली हैं। सुइयाँ ताँबे, काँसे और सोने की हैं। नर्तकी व नरेश की मूर्ति के बदन का दुशाला गुलकारी का है, अर्थात् उस समय बारीक कशीदाकारी होती थी। कुछ सुइयाँ हाथीदाँत की हैं व कुछ ताँबे की सुइयाँ भी मिली हैं। इस से शायद दरियाँ बुनी जाती थी।

अब मुअनजो-दड़ो की खुदाई बंद कर दी गई है। सिंधु के पानी के रिसाव से क्षार और दलदल की समस्या पैदा हो गई है। मौजूद खंडहरों को बचा कर रखना भी एक समस्या है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1) सिंधु सभ्यता साधन संपन्न थी, पर उस में भव्यता का आडंबर नहीं था। कैसे?

उत्तर : सिंधु सभ्यता साधन संपन्न थी, इसे हम अनेक उदाहरणों से सिद्ध कर सकते हैं। जैसे :-

यहाँ नगर सुनियोजित थे। चौड़ी सड़कें थी। ग्रिड प्रणाली से बसा शहर था। अनाज रखने के लिए कोठार था। श्रेष्ठ वास्तु कला, जिसका प्रमाण कुंड और नगर के मकान हैं। श्रेष्ठ जल नियोजन और पानी निकासी की व्यवस्था। खेती का ज्ञान। साफ सफाई का विशेष ध्यान। कला में सुरुचि - प्रमाण है वहाँ से मिली मूर्तियाँ और बर्तनों पर हुई चित्रकारी। ये साधन संपन्न सभ्यता समाज पोषित सभ्यता थी।

सिंधु घाटी की सभ्यता चाहे साधन संपन्न थी, पर उस में भव्यता का आडंबर नहीं था। वहाँ न भव्य प्रासाद हैं और न भव्य मंदिर, न वहाँ महंतों और सम्राटों की समाधियाँ हैं। वहाँ के मकान छोटे थे, उनके कमरे छोटे थे। मूर्तियाँ और औजार भी छोटे-छोटे थे। नरेश का मुकुट भी छोटा है। यहाँ तक कि नावें भी छोटी हैं। अर्थात् सिंधु घाटी की सभ्यता साधन संपन्न तो है, परंतु उसमें भव्यता का आडंबर नहीं है।

प्रश्न 2) सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है, जो, राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर, समाज- पोषित था। ऐसा क्यों कहा गया?

अथवा

"सिंधु सभ्यता का सौंदर्य-बोध समाज-पोषित था।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : सिंधु सभ्यता का सौंदर्य-बोध वहाँ की प्रत्येक वस्तु में मिलता है। नगर नियोजन हो या पानी निकासी की व्यवस्था, धातु व पत्थर की मूर्तियाँ, मिट्टी के बर्तन, उन पर बने चित्र, खिलौने, केश विन्यास, आभूषण आदि सब कुछ उस सभ्यता के सौंदर्य बोध के प्रमाण हैं।

परंतु इस सभ्यता में भव्य प्रासाद नहीं, भव्य मंदिर नहीं, महंतों और सम्राटों की समाधियाँ नहीं, औजार नहीं, इन सब से सिद्ध होता है कि वो सभ्यता राज पोषित या धर्म घोषित नहीं थी। सिंधु सभ्यता में अनुशासन था। यह अनुशासन प्रत्येक स्थान पर नजर आता था, चाहे नगर नियोजन हो, पानी निकासी की व्यवस्था हो, मुहरों, ठप्पों आदि सब में नजर आता था। इससे पता चलता है कि सिंधु सभ्यता समाज पोषित थी।

प्रश्न 3) पुरातत्व के किन चिह्नों के आधार पर आप कह सकते हैं – "सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।"

अथवा

उस खास बात का विस्तार से उल्लेख कीजिए जो अजायबघर में रखे सिंधु सभ्यता के पुरातत्व के अवशेषों से सिद्ध होती है।

अथवा

आप कैसे कह सकते हैं कि सिंधु सभ्यता ताकत से शासित नहीं, बल्कि समझ से अनुशासित सभ्यता थी?

उत्तर : अजायबघर में रखे पुरातत्व के अवशेषों से पता चलता है कि यहाँ की कलाकृतियों में एकरूपता है, कलात्मकता है, चाहे वो मूर्तियाँ हों, बर्तन हों, बर्तनों पर की हुई चित्रकारी हो, मुहरें हो या ठप्पे हो। वहाँ औजार तो मिले हैं, किंतु हथियार नहीं मिले। हड़प्पा, मुअनजो-दड़ो से लेकर हरियाणा तक कहीं भी वैसे हथियार नहीं मिले, जैसे राजतांत्रिक सत्ता में होते हैं। यहाँ राजप्रासाद भी नहीं हैं। इससे यही पता चलता है कि यह सभ्यता ताकत से शासित सभ्यता नहीं थी।

चाहे यह सभ्यता ताकत से अनुशासित नहीं थी, फिर भी यहाँ अनुशासन था, जो सिंधु घाटी के नगर नियोजन में, वहाँ से मिली प्रत्येक वस्तु में दिखता है। निश्चित रूप से सिंधु सभ्यता समझ से अनुशासित सभ्यता थी।

प्रश्न 4) **"**यह सच है कि यहाँ किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ आपको कहीं नहीं ले जाती, वे आकाश की तरफ अधूरी रह जाती हैं। लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर हैं, वहाँ से आप इतिहास को नहीं, उसके पार झाँक रहे हैं।" इस कथन के पीछे लेखक का क्या आशय है?

उत्तर : सिंधु घाटी की सभ्यता पाँच हज़ार वर्ष पुरानी है। हमारे पास लिपिबद्ध इतिहास चौथी शताब्दी ई. पू. से ही है। अर्थात् हम कह सकते हैं सिंधु घाटी की सभ्यता हमारे इतिहास से दुगनी उम्र की है। किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ हमें कहीं लेकर नहीं जाती, पर इन सीढ़ियों पर खड़े होकर हमें गर्व होता है। हम उस सभ्यता के वंशज हैं, जो सभ्यता बहुत उन्नत थी। हड़प्पा, मुअनजो-दड़ो जैसे समृद्ध और बड़े शहर जिसके अंग थे। जब संसार में सभ्यता का प्रकाश फैला भी नहीं था, उस समय हमारी एक समृद्ध सभ्यता थी, जिसके प्रमाण हैं हड़प्पा और मुअनजो-दड़ो जैसे सुनियोजित नगर, सुंदर कलाकृतियाँ। सीढ़ियों पर खड़े होकर हमें ऐसे लगता है हम इतिहास के पार झाँक रहे हैं।

प्रश्न 5) "टूटे-फूटे खंडहर और संस्कृति इतिहास के साथ-साथ अपने समय का दस्तावेज भी होते हैं।" 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर उपर्युक्त कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर : मुअनजो-दड़ो के टूटे-फूटे खंडहर हमें बताते हैं कि ये संस्कृति पाँच हज़ार साल पुरानी थी, जो बहुत उन्नत और सभ्य भी थी। ये टूटे-फूटे खंडहर हमारे इतिहास के दस्तावेज हैं। इतिहास में हम किसी सभ्यता विशेष की विशेषताओं को पढ़ते हैं, यहाँ दस्तावेज हमारे सामने प्रत्यक्ष हैं। ये दस्तावेज बताते हैं कि ये सभ्यता सुनियोजित थी। प्रमाण है यहाँ का नगर नियोजन और वास्तु के प्रमाण, यहाँ की मूर्तियाँ, बर्तन, मुहरें, ठप्पे आदि। टूटे-फूटे खंडहर के रूप में प्राप्त दस्तावेज बताते हैं कि ये सभ्यता न राजपोषित थी, न ही धर्म पोषित थी, बल्कि समझ से पोषित सभ्यता थी। इन टूटे-फूटे खंडहरों में खड़े होकर हमें ये भी लगता है कभी यहाँ लोग रहते थे, जो हमारे पूर्वज थे। इन खंडहरों में खड़े होकर हमें लगता है कि ये किसी का घर है, रसोई के पास खड़े होकर वहाँ बनने वाले व्यंजनों की खुशबू भी हम अनुभव करते हैं। ऐसे लगता है यहाँ रहने वाले अभी कुछ समय पहले ही घर छोड़ गए हैं। ये खंडहर हमारी दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यता के ठोस प्रमाण हैं।

प्रश्न 6) नदी, कुएँ, स्नानघर और बेजोड़ निकासी व्यवस्था को देखते हुए लेखक पाठकों से प्रश्न पूछता है कि क्या हम सिंधु घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कह सकते हैं? आपका जवाब लेखक के पक्ष में है या विपक्ष में? तर्क सहित उत्तर दें।

उत्तर : लेखक ने सिंधु घाटी सभ्यता को जल संस्कृति कहा है। हम भी लेखक की बात से सहमत हैं। इसके अनेक कारण हैं :-

1. इस सभ्यता के सबसे पुराने शहर मुअनजो-दड़ो के पास से सिंधु नदी बहती है, जो जल का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है।
2. अकेले मुअनजो-दड़ो शहर में जल की आपूर्ति के लिए सात सौ कुएँ थे।
3. मुअनजो-दड़ो शहर में घर छोटे हैं, परंतु प्रत्येक घर में स्नानघर थे।
4. वहाँ पानी निकासी की उत्तम व्यवस्था थी। नालियाँ पक्की हैं और ढकी हुई हैं। पानी की निकासी की ऐसी व्यवस्था आज के आधुनिक शहरों और कस्बों में भी नहीं है।

उपरोक्त सभी उदाहरण सिद्ध करते हैं कि सिंधु घाटी की सभ्यता वास्तव में जल संस्कृति थी।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 7) सिंधु घाटी सभ्यता का कोई लिखित साक्ष्य नहीं मिला है, सिर्फ अवशेषों के आधार पर ही धारणा बनाई गई है। इस लेख में मुअनजो-दड़ो के बारे में जो धारणा व्यक्त की गई है, क्या आपके मन में इससे भिन्न धारणा या भाव भी पैदा होता है? इन संभावनाओं पर चर्चा करें।

उत्तर : मुअनजो-दड़ो के अवशेषों को देखकर लेखक ने कुछ धारणाएँ बनाई। हम लेखक से सहमत तो हैं, पर लेखक को पढ़ने के बाद हमारे मन में कुछ इस प्रकार के विचार आते हैं।

लेखक ने कहा है कि यहाँ मानव निर्मित टीले हैं, जिन पर इमारतें बनाई गई हैं। हमारी सोच है यहाँ टीले होंगे, उन्हीं को ईटों से पक्का कर के उन पर इमारतें बनाई गई हैं।

लेखक ने इमारतों के कल्पनात्मक नाम दिए हैं, जैसे सभा भवन, ज्ञानशाला आदि। हो सकता है कि इन इमारतों को किसी और काम के लिए उपयोग में लिया जाता हो।

लेखक का अनुमान है समाज में तीन वर्ग थे - संपन्न वर्ग, कामगार वर्ग और इतर वर्ग। पर भवन दो प्रकार के ही हैं, इतर वर्ग केवल कल्पना है।

यहाँ नावें छोटी थी, इसलिए आशंका होती है कि इन छोटी-छोटी नावों के द्वारा आयात-निर्यात कैसे होता होगा।

कुओं के अवशेष तो हैं, पर सिंचाई के चिह्न नहीं मिले। इसलिए निश्चित रूप से कुओं से सिंचाई नहीं होती थी।

लेखक की कल्पना से कुछ स्थानों पर हमारे विचार अलग है।

प्रश्न 8) "अतीत में दबे पाँव" पाठ के आधार पर महाकुंड का वर्णन कीजिए।

उत्तर : मुअनजो-दड़ो में स्थित कुंड की लंबाई चालीस फुट, चौड़ाई पच्चीस फुट और गहराई सात फुट है। कुंड के उत्तर, दक्षिण दिशा से सीढ़ियाँ कुंड में उतरती हैं। कुंड के उत्तर दिशा में आठ स्नानघर दो पंक्तियों में हैं। इन स्नानघरों की विशेषता है कि किसी भी स्नानघर का द्वार दूसरे स्नानघर के द्वार के सामने नहीं खुलता। कुंड के तीन तरफ साधुओं के कक्ष हैं। यह कुंड ईटों से बना है। कुंड का पानी रिस न सके और अशुद्ध पानी कुंड के पानी में न मिले, इसके लिए कुंड की तली में और दीवारों की ईंटों में चूना और चिरोड़ी के गारे का प्रयोग किया गया है। दीवारों के पीछे एक दूसरी दीवार खड़ी की गई है। इसमें सफेद डामर का प्रयोग किया गया है। कुंड में पानी की व्यवस्था के लिए कुआँ है। यह कुआँ दोहरे घेरे का है। मुअनजो-दड़ो में किसी अन्य कुएँ का घेरा दोहरा नहीं है। कुंड का पानी बाहर बहाने के लिए नालियाँ बनी हैं, जो पक्की ईंटों की है और ढकी हुई हैं। कुंड पवित्र अनुष्ठानिक कुंड है तथा वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है।

प्रश्न 9) "सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्व अधिक था।" उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"कला की दृष्टि से हड़प्पा सभ्यता समृद्ध थी।" पाठ के आधार पर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्व अधिक था। उनकी कला की समृद्धि हर जगह नजर आती है, जैसे - उनकी सुनियोजित नगर-योजना, बेजोड़ पानी निकासी की व्यवस्था, वास्तुकला में भी कला और सुरुचि नजर आती है। वहाँ के धातु-पत्थर की मूर्तियों, मृदा बर्तन, बर्तनों पर चित्रित वनस्पति, पशु-पक्षियों के चित्र, मुहरें, ठप्पे सभी में कलात्मकता है। तरह-तरह के खिलौने, केश विन्यास, आभूषणों में भी सुरुचि नजर आती है। वहाँ के लोग सुई से कशीदाकारी करते थे। नरेश और नर्तकी के दुशाले का गुलकारी का काम अनुपम है। इतना ही नहीं, सुघड़ अक्षरों से युक्त लिपि कला की भव्यता को दर्शाती है। हम कह सकते हैं कि सिंधु घाटी की सभ्यता में भव्यता का आडंबर नहीं, बल्कि ये कला और सुरुचि से समृद्ध है।

प्रश्न 10) "अतीत में दबे पाँव" पाठ के आधार पर शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर : मुअनजो-दड़ो की यात्रा पर लेखक जब गए तो इतने लंबे-चौड़े शहर को देखकर आश्चर्यचकित रह गये। मुअनजो-दड़ो अतीत में बसा एक सुनियोजित शहर है। ये वास्तुकला की दृष्टि से भी श्रेष्ठ है। वहाँ के सभागार, कोठार, स्नानघर, कुंड, स्तूप आदि इसके प्रमाण हैं। सुव्यवस्थित घर देखकर लेखक को लगता है, जैसे अब भी लोग इन घरों में रहते होंगे। रसोई के पास खड़े होकर रसोई के पकवानों की खुशबू आती है। वहाँ के मृदा बर्तनों, मुहरों, ठप्पों, आभूषणों, चित्रकारी आदि में वहाँ के लोगों की सुरुचि का ज्ञान होता है। टूटी-फूटी सीढ़ियाँ कहीं लेकर नहीं जाती, पर अतीत में हम जरूर झाँक सकते हैं, जो बताते हैं हमारे पूर्वज इतने समृद्ध थे। अगर हमारी ये सभ्यता नष्ट न हुई होती, तो हम निरंतर प्रगति की ओर बढ़ रहे होते और शायद महाशक्ति होते। मगर दुर्भाग्य से हमारे पूर्वजों के बढ़ते कदम अतीत में दब गए। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि पाठ का शीर्षक पूर्ण रूप से सार्थक है।

प्रश्न 11) मुअनजो-दड़ो की सभ्यता को किस आधार पर लो-प्रोफाइल सभ्यता कहा गया है?

उत्तर : मुअनजो-दड़ो की सभ्यता न राजपोषित है, न ही धर्मपोषित है, क्योंकि यहाँ न भव्य प्रासाद हैं, न समाधियाँ हैं। ये सभ्यता समाज अनुशासित सभ्यता थी। यहाँ के मूर्ति शिल्प छोटे हैं, औजार भी छोटे हैं। नरेश के सिर का मुकुट छोटा है, इससे छोटे सिर के मुकुट की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यहाँ के लोगों की नावें मिस्र की नावों जैसी हैं, पर आकार में छोटी हैं। ये एक लो-प्रोफाइल सभ्यता थी, पर लघुता में महत्ता का अनुभव कराती थी।

* * * * *